अध्याय 8: नए मेहमान

विषय-सूची 8 प्रश्नावली · 22 प्रश्न

प्रश्नावली 8.1	मेरी समझ से (MCQ)	5 प्रश्न
प्रश्नावली 8.2	मिलकर करें मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 8.3	सोच-विचार के लिए	5 प्रश्न
प्रश्नावली 8.4	अनुमान और कल्पना से	3 प्रश्न
प्रश्नावली 8.5	एकांकी की रचना — हाँ/नहीं	1 प्रश्न
प्रश्नावली 8.6	भाषा की बात — बात पर बल देना ('ही' का प्रयोग)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 8.7	तार से संदेश	2 प्रश्न
प्रश्नावली 8.8	नाप, तौल और मुद्राएँ	4 प्रश्न

प्रश्नावली 8.1 — मेरी समझ से (MCQ)

प्रश्न 1

आगंतुकों ने विश्वनाथ के बच्चों को 'सीधे लड़के' किस संदर्भ में कहा? (क) अतिथियों की सेवा करने के कारण (ख) किसी तरह का प्रश्न न करने के कारण (ग) आजादकारिता के भार के कारण (घ) गरमी को चुपचाप सहने के कारण

हल

एकांकी में जब प्रमोद और किरण ने आगंतुकों को ठंडा पानी पिलाया, उस समय नन्हेमल ने बच्चों को 'सीधे लड़के' कहा।

बच्चों ने बिना कोई प्रश्न किए या हिचकिचाहट दिखाए पानी लाकर दिया — उन्होंने किसी भी प्रकार की जिज्ञासा या विरोध नहीं जताया।

इसीलिए उत्तर है (ख) — किसी तरह का प्रश्न न करने के कारण।

उत्तर: (ख) किसी तरह का प्रश्न न करने के कारण

प्रश्न 2

"एक ये पड़ोसी हैं, निर्दयी..." विश्वनाथ ने अपने पड़ोसी को निर्दयी क्यों कहा? (क) उन्हें कष्ट में देखकर प्रसन्न होते हैं (ख) पड़ोसी किसी प्रकार का सहयोग नहीं करते हैं (ग) लड़ने-झगड़ने के अवसर ढूँढते हैं (घ) अतिथियों का अपमान करते हैं

हल

विश्वनाथ ने कहा — 'एक ये पड़ोसी हैं, निर्दयी, जो खाली छत पड़ी रहने पर भी बच्चों के लिए एक खाट नहीं बिछाने देंगे।'

पड़ोसी ने छत पर खाट बिछाने की अनुमति नहीं दी, यहाँ तक कि बच्चों के सोने के लिए भी नहीं।

इसके अलावा रेवती ने बताया कि पड़ोसी 'उन्हें मुसीबत में देखकर प्रसन्न होते हैं।'

अतः उत्तर (क) — उन्हें कष्ट में देखकर प्रसन्न होते हैं — सही है।

उत्तर: (क) उन्हें कष्ट में देखकर प्रसन्न होते हैं

प्रश्न 3

"ईश्वर करें इन दिनों कोई मेहमान न आए।" रेवती इस तरह की कामना क्यों कर रही है? (क) मेहमान के ठहरने की उचित व्यवस्था न होने के कारण (ख) रेवती का स्वास्थ्य कुछ समय से ठीक न होने के कारण (ग) अतिथियों के आने से घर का कार्य बढ़ जाने के कारण (घ) उसे अतिथियों का आना-जाना पसंद न होने के कारण

हल

रेवती ने कहा — 'ईश्वर करें इन दिनों कोई मेहमान न आए। मैं तो वैसे ही गरमी के मारे मर रही हूँ। पिछले पंद्रह दिन से दर्द के मारे सिर लट रहा है। मैं ही जानती हूँ जैसे रोटी बनाती हूँ।'

यह कथन स्पष्ट करता है कि उसका स्वास्थ्य पिछले पंद्रह दिनों से ठीक नहीं था — सिरदर्द और गरमी दोनों साथ थे।

अतः सही उत्तर है (ख) — रेवती का स्वास्थ्य कुछ समय से ठीक न होने के कारण।

उत्तर: (ख) रेवती का स्वास्थ्य कुछ समय से ठीक न होने के कारण

प्रश्न 4

"हे भगवान! कोई मुसीबत न आ जाए।" रेवती कौन-सी मुसीबत नहीं आने के लिए कहती है? (क) पानी की कमी होने की (ख) पड़ोसियों के चिल्लाने की (ग) मेहमानों के आने की (घ) गरमी के कारण बीमारी की

हल

एकांकी में जब दरवाजा खटखटाया गया, तब रेवती ने कहा — 'हे भगवान! कोई मुसीबत न आ जाए।'

यह कथन उसी क्षण का है जब अनजाने आगंतुक घर में आने वाले थे।

रेवती पहले ही मेहमानों के आने से डर रही थी क्योंकि गरमी, बीमारी और कम जगह के कारण उनके ठहरने की व्यवस्था करना कठिन था।

अतः सही उत्तर है (ग) — मेहमानों के आने की।

उत्तर: (ग) मेहमानों के आने की

प्रश्न 5

इस एकांकी के आधार पर बताएँ कि मुख्य रूप से कौन-सी बात किसी रचना को नाटक का रूप देती है? (क) संवाद (ख) कथा (ग) वर्णन (घ) मंचन

हल

एकांकी (एकांकी नाटक) की विशेषता यह है कि इसमें कहानी मुख्य रूप से पात्रों के संवादों (बातचीत) के माध्यम से आगे बढ़ती है।

पाठ में विश्वनाथ, रेवती, नन्हेमल, बाबूलाल आदि के संवाद ही एकांकी का मूल आधार हैं।

कथा और वर्णन केवल सहायक होते हैं, जबकि संवाद ही नाटकीय रूप का केंद्रीय तत्व है।
अतः सही उत्तर है (क) — संवाद।

उत्तर: (क) संवाद

प्रश्नावली 8.2 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

स्तंभ 1 की पंक्तियों को स्तंभ 2 की उनके सही भाव वाली पंक्तियों से रेखा खींचकर मिलाइए— स्तंभ 1: 1. लाखों के आदमी खाक में मिल गए। 2. धोती ऐसी चरा रही है, जैसे पुरानी हो। 3. माल-मसाला तो अंटी में है न? 4. खाने में क्या देर-दार है। 5. पहले आत्मा फिर परमात्मा स्तंभ 2: 1. भोजन की व्यवस्था कब तक हो जाएगी 2. पहले अपना ध्यान फिर दूसरा काम 3. बहुत ही समृद्ध व्यक्ति थे पर अब उनके पास कुछ भी नहीं है 4. कपड़ा पसीने से भीगकर पुराने जैसा हो गया है 5. धनराशि सुरक्षित तो है न!

हल

1. 'लाखों के आदमी खाक में मिल गए' → 'बहुत ही समृद्ध व्यक्ति थे पर अब उनके पास कुछ भी नहीं है' (स्तंभ 2 — 3)
2. 'धोती ऐसी चरा रही है, जैसे पुरानी हो' → 'कपड़ा पसीने से भीगकर पुराने जैसा हो गया है' (स्तंभ 2 — 4)
3. 'माल-मसाला तो अंटी में है न?' → 'धनराशि सुरक्षित तो है न!' (स्तंभ 2 — 5)
4. 'खाने में क्या देर-दार है' → 'भोजन की व्यवस्था कब तक हो जाएगी' (स्तंभ 2 — 1)
5. 'पहले आत्मा फिर परमात्मा' → 'पहले अपना ध्यान फिर दूसरा काम' (स्तंभ 2 — 2)

उत्तर: 1→3, 2→4, 3→5, 4→1, 5→2

प्रश्नावली 8.3 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

(क) "शहर में तो ऐसे ही मकान होते हैं।" नन्हेमल का 'ऐसे ही मकान' से क्या आशय है?

हल

एकांकी में जब नन्हेमल को देखा कि विश्वनाथ का मकान छोटा और तंग है, तो उसने कहा — 'शहर में तो ऐसे ही मकान होते हैं।'

नन्हेमल का आशय यह था कि शहर में किराये के मकान प्रायः छोटे होते हैं — सीमित कमरे, तंग छत और कम सुविधाएँ।

उसने इस कथन से विश्वनाथ की तंग रहन-सहन की परिस्थिति को सामान्य बताते हुए अपनी आत्मीयता प्रकट की।

उत्तर: नन्हेमल का आशय था कि शहर में छोटे, तंग, सुविधाहीन किराये के मकान होना स्वाभाविक है — यह कोई असाधारण बात नहीं।

प्रश्न 2

(ख) पड़ोसी को विश्वनाथ से किस तरह की शिकायत है? आपके विचार से पड़ोसी का व्यवहार उचित है या अनुचित? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

हल

पड़ोसी की शिकायत: विश्वनाथ के मेहमानों ने उसकी छत पर हाथ धो लिए, जिससे पानी फैल गया। इसके अलावा पहले भी एक मेहमान ने पड़ोसी की खाट बिछाकर लेट जाने की गलती की थी।

पड़ोसी का कहना था — 'देखिए साहब, मेहमान आपके होंगे, मेरे नहीं। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि मेरी छत पर इस तरह गंदा पानी फैलाया जाए।'

पड़ोसी का व्यवहार: शिकायत करना उचित था, क्योंकि दूसरे की संपत्ति पर बिना अनुमति के अव्यवस्था करना गलत है।

किंतु पड़ोसी का व्यवहार कुछ कठोर भी था — एकांकी में वे विश्वनाथ की किसी भी परेशानी में सहयोग करने को तैयार नहीं थे और मुसीबत में प्रसन्न होते थे।

आदर्श पड़ोस-धर्म के अनुसार शिकायत करना उचित, किंतु सर्वथा असहयोगी रहना अनुचित है।

उत्तर: पड़ोसी की शिकायत — छत पर पानी फैलाना और खाट बिछाना — उचित थी। किंतु किसी भी परिस्थिति में सहयोग न करना और दूसरे की तकलीफ में प्रसन्न होना अनुचित और अमानवीय है।

प्रश्न 3

(ग) एकांकी में विश्वनाथ नन्हेमल और बाबूलाल को नहीं जानता है, फिर भी उन्हें अपने घर में आने देता है। क्यों?

हल

विश्वनाथ ने आगंतुकों से कई बार पूछा कि वे कहाँ जाना चाहते हैं, पर वे ठीक-ठीक उत्तर नहीं दे पाए।

नन्हेमल और बाबूलाल ने कहा कि वे 'संपतराम गोटेवाले' के परिचित हैं और विश्वनाथ के घर का पता किसी ने

दिया था।

विश्वनाथ भारतीय 'अतिथि देवो भव' की परंपरा का पालन करने वाला व्यक्ति था — उन्हें भगाना उचित न लगा।

वे थके-हारे रात को आए थे, इसलिए विश्वनाथ ने मानवता और सौजन्य के कारण उन्हें घर में आने दिया।

उत्तर: विश्वनाथ ने भारतीय अतिथि-सत्कार की परंपरा और मानवीय सौजन्य के कारण अनजान मेहमानों को घर में आने दिया, यद्यपि वह उन्हें पहचानता नहीं था।

प्रश्न 4

(घ) एकांकी के उन संवादों को ढूँढकर लिखिए जिनसे पता चलता है कि बाबूलाल और नन्हेमल विश्वनाथ के परिचित नहीं हैं?

हल

संवाद 1 — विश्वनाथ: 'जी, आप लोग...' (पहचानने की कोशिश)

संवाद 2 — विश्वनाथ: 'मैं संपतराम को नहीं जानता।'

संवाद 3 — रेवती: 'ये लोग कौन हैं? जान-पहचान के तो मालूम नहीं पड़ते।' / विश्वनाथ: 'न जाने कौन हैं।'

संवाद 4 — विश्वनाथ: 'क्या पूछ लूँ? दो-तीन बार पूछा, ठीक-ठीक उत्तर ही नहीं देते।'

संवाद 5 — विश्वनाथ: 'लेकिन मैं कविराज तो नहीं हूँ?' (अपने नाम की पहचान नहीं होने पर)

संवाद 6 — नन्हेमल: 'हमें याद नहीं आ रहा। हमें तो जो पता दिया था उसी के सहारे आ गए।'

उत्तर: एकांकी के ये संवाद स्पष्ट करते हैं कि नन्हेमल और बाबूलाल वास्तव में विश्वनाथ को नहीं जानते — न नाम, न परिचय, न सही पता — फिर भी वे उनके घर में आ गए।

प्रश्न 5

(ङ) एकांकी के उन वाक्यों को ढूँढकर लिखिए जिनसे पता चलता है कि शहर में भीषण गरमी पड़ रही है।

हल

1. 'ओह, बड़ी गरमी है! इन बंद मकानों में रहना कितना भयंकर है!' (विश्वनाथ)
2. 'पता तक नहीं हिल रहा है। जैसे साँस बंद हो जाएगी। सिर लट जा रहा है।' (रेवती)
3. 'पानी पीते-पीते पेट लूला जा रहा है और प्यास है कि बुझने का नाम नहीं लेती।'
4. 'सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो।'
5. 'चारों तरफ दीवारें तप रही हैं।'
6. 'यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते रहते हैं।'
7. 'तमाम शरीर मारे गरमी के उबल उठा है।'
8. 'बड़ी गरमी है। क्या कहें, पंडित जी, पैदल चले आ रहे हैं, कपड़े तो ऐसे हो गए कि निचोड़ लो।' (नन्हेमल)

उत्तर: उपर्युक्त वाक्य एकांकी में भीषण गरमी की स्थिति का यथार्थ चित्रण करते हैं।

प्रश्नावली 8.4 — अनुमान और कल्पना से

प्रश्न 1

(क) एकांकी में विश्वनाथ अपनी पत्नी को अतिथियों के लिए भोजन की व्यवस्था करने के लिए कहता है। साथ ही रेवती की अस्वस्थता का विचार करके भोजन बाजार से मँगवाने का सुझाव भी देता है। लेकिन उसने स्वयं अतिथियों के लिए भोजन बनाने के विषय में क्यों नहीं सोचा?

हल

एकांकी का समय लगभग 1940-60 का दशक है, जब पारिवारिक भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से विभाजित थीं — भोजन बनाना स्त्री का कार्य माना जाता था।

विश्वनाथ का यह सोचना कि 'खाना रेवती बनाएगी या बाजार से आएगा' — उस युग की सामाजिक मानसिकता को दर्शाता है।

विश्वनाथ ने बाजार से भोजन मँगवाने का सुझाव देकर रेवती की तकलीफ का ध्यान रखने की कोशिश की, परंतु स्वयं रसोई में जाने का विचार नहीं आया।

यह एकांकी उस काल की लैंगिक असमानता को भी परोक्ष रूप से उजागर करती है।

उत्तर: विश्वनाथ ने स्वयं भोजन बनाने के बारे में नहीं सोचा क्योंकि उस काल की सामाजिक मान्यता के अनुसार रसोई का काम स्त्री का माना जाता था।

प्रश्न 2

(ख) एकांकी में विश्वनाथ का बेटा प्रमोद अतिथियों के पेयजल की व्यवस्था करता है और छोटी बहन का भी ध्यान रखता है। प्रमोद को इस तरह के उत्तरदायित्व क्यों दिए गए होंगे?

हल

प्रमोद परिवार का बड़ा बच्चा प्रतीत होता है जो अपनी जिम्मेदारियाँ समझता है।

माँ रेवती बीमार थी और पिता विश्वनाथ अतिथियों से बात कर रहे थे — ऐसे में प्रमोद को उत्तरदायित्व मिलना स्वाभाविक था।

भारतीय परिवारों में बच्चों को छोटी उम्र से ही घर के काम और छोटे भाई-बहनों की देखभाल करना सिखाया जाता है।

प्रमोद का यह व्यवहार उसकी परिपक्वता और परिवार के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

उत्तर: प्रमोद को उत्तरदायित्व इसलिए दिए गए होंगे क्योंकि वह बड़ा बच्चा था, माँ बीमार थी और पिता व्यस्त थे — भारतीय परिवारों में बच्चे घर के कार्यों में सहयोग करते हैं।

प्रश्न 3

(ग) "कैसी बातें करते हो, भैया! मैं अभी खाना बनाती हूँ" भीषण गरमी और सिर में दर्द के बावजूद भी रेवती भोजन की व्यवस्था करने के लिए क्यों तैयार हो गई होगी?

हल

रेवती का यह कथन भारतीय नारी के त्याग और आतिथ्य-भाव को प्रकट करता है।
भले ही वह पंद्रह दिनों से सिरदर्द और गरमी से पीड़ित थी, उसने घर आए अतिथियों को भूखा नहीं रहने दिया।
यह 'अतिथि देवो भव' की भावना का व्यावहारिक रूप है — अतिथि का अपमान वह नहीं कर सकती थी।
इसके अलावा विश्वनाथ का आग्रह और मेहमानों की उपस्थिति ने उसे अपनी तकलीफ भुलाकर कर्तव्य-पालन के लिए प्रेरित किया।

उत्तर: रेवती 'अतिथि देवो भव' की भावना और पारिवारिक उत्तरदायित्व के कारण बीमारी के बावजूद खाना बनाने को तैयार हो गई — यह भारतीय नारी के त्याग और सेवाभाव का प्रतीक है।

प्रश्नावली 8.5 — एकांकी की रचना — हाँ/नहीं

प्रश्न 1

(ख) नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। एकांकी के बारे में जो वाक्य आपको सही लग रहे हैं, उनके सामने 'हाँ' लिखिए और जो सही नहीं लग रहे हैं, उनके सामने 'नहीं' लिखिए। 1. 'नए मेहमान' एकांकी में पूरी कहानी एक ही स्थान, घर में घटित होती दिखाई गई है। 2. एकांकी में पात्रों की संख्या बहुत अधिक है। 3. एकांकी में एक कहानी छिपी है। 4. एकांकी और कहानी में कोई अंतर नहीं है। 5. एकांकी में कहानी की घटनाएँ अलग-अलग दिनों या महीनों में हो रही हैं। 6. एकांकी में कहानी मुख्य रूप से संवादों से आगे बढ़ती है। 7. एकांकी में पात्रों को अभिनय के लिए निर्देश दिए गए हैं।

हल

1. हाँ — पूरी एकांकी विश्वनाथ के घर के एक कमरे में घटित होती है।
2. नहीं — एकांकी में पात्र सीमित हैं: विश्वनाथ, रेवती, प्रमोद, किरण, नन्हेमल, बाबूलाल और पड़ोसी।
3. हाँ — एकांकी में अनजान मेहमानों के अचानक आने और आतिथ्य की कहानी छिपी है।
4. नहीं — एकांकी में संवाद, रंगमंच-निर्देश और मंचन होता है; कहानी में वर्णन प्रधान होता है।
5. नहीं — सभी घटनाएँ एक ही रात (गरमी की रात आठ बजे के आसपास) में घटित होती हैं।
6. हाँ — पात्रों के संवाद ही एकांकी की कथावस्तु को आगे बढ़ाते हैं।
7. हाँ — एकांकी में कोष्ठक में अभिनय-संकेत (stage directions) दिए गए हैं, जैसे '(पंखा जोर-जोर से करने लगता है)'।

उत्तर: 1. हाँ, 2. नहीं, 3. हाँ, 4. नहीं, 5. नहीं, 6. हाँ, 7. हाँ

प्रश्नावली 8.6 — भाषा की बात — बात पर बल देना ('ही' का प्रयोग)

प्रश्न 1

(ख) नीचे लिखे वाक्यों में ऐसे स्थान पर 'ही' का प्रयोग कीजिए कि वे सामने लिखा अर्थ देने लगें— 1. विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे — और किसी के अतिथि नहीं। 2. विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे — यहाँ के अतिरिक्त और कहीं नहीं। 3. विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे — यहाँ रुकना निश्चित है।

हल

1. 'और किसी के अतिथि नहीं' → विश्वनाथ के ही अतिथि यहाँ रुकेंगे।
('ही' 'विश्वनाथ के' के बाद लगाने से यह अर्थ मिलता है कि केवल विश्वनाथ के अतिथि यहाँ हैं, और किसी के नहीं।)
2. 'यहाँ के अतिरिक्त और कहीं नहीं' → विश्वनाथ के अतिथि यहाँ ही रुकेंगे।
('ही' 'यहाँ' के बाद लगाने से यह अर्थ मिलता है कि वे केवल यहाँ रुकेंगे, कहीं और नहीं।)
3. 'यहाँ रुकना निश्चित है' → विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे ही।
('ही' 'रुकेंगे' के बाद लगाने से यह अर्थ मिलता है कि रुकना तय है, इसमें कोई संशय नहीं।)

उत्तर: 1. विश्वनाथ के ही अतिथि यहाँ रुकेंगे। 2. विश्वनाथ के अतिथि यहाँ ही रुकेंगे। 3. विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे ही।

प्रश्नावली 8.7 — तार से संदेश

प्रश्न 1

(क) तार भेजने के आधार पर अनुमान लगाएँ कि यह एकांकी लगभग कितने वर्ष पहले लिखी गई होगी?

हल

'तार' (telegram) भारत में एक सामान्य संचार-माध्यम था जो 1850 के दशक में शुरू हुआ और 2013 में बंद हो गया।
एकांकी में 'तार' को संचार का सामान्य और प्रचलित साधन बताया गया है।
एकांकी के लेखक उदयशंकर भट्ट (1898–1966) थे — उन्होंने संभवतः यह एकांकी 1940-60 के दशक में लिखी।
2026-27 (वर्तमान पाठ्यपुस्तक) से देखें तो एकांकी लगभग 60 से 80 वर्ष पहले लिखी गई होगी।

उत्तर: यह एकांकी लगभग 60–80 वर्ष पहले (1940–1960 के दशक में) लिखी गई होगी, जब तार (telegram) संचार का प्रमुख साधन था।

प्रश्न 2

(ख) आजकल संदेश भेजने के कौन-कौन से साधन सुलभ हैं?

हल

आजकल संदेश भेजने के प्रमुख साधन हैं:
1. मोबाइल फोन — कॉल, SMS (लघु संदेश सेवा)
2. इंटरनेट-आधारित ऐप — WhatsApp, Telegram, Signal आदि (तत्काल संदेश)
3. ईमेल (electronic mail) — लंबे और दस्तावेज़ सहित संदेश
4. सोशल मीडिया — Facebook, Instagram, Twitter (सार्वजनिक/निजी संदेश)
5. वीडियो कॉल — Zoom, Google Meet (आमने-सामने संचार)
6. डाक (पत्र) — अभी भी उपलब्ध, परंतु कम प्रचलित

उत्तर: आजकल मोबाइल फोन (कॉल/SMS), WhatsApp जैसे मैसेजिंग ऐप, ईमेल, सोशल मीडिया और वीडियो कॉल संदेश भेजने के प्रमुख साधन हैं।

प्रश्नावली 8.8 — नाप, तौल और मुद्राएँ

प्रश्न 1

(क) पता लगाइए कि एक रुपये में कितने आने होते हैं?

हल

भारत में दशमलव मुद्रा प्रणाली (1957) से पहले की मुद्रा व्यवस्था में:
1 रुपया = 16 आने
एकांकी में 'साढ़े नौ आने गज' का उल्लेख इसी पुरानी मुद्रा प्रणाली को दर्शाता है।

उत्तर: एक रुपये में 16 आने होते थे (पुरानी भारतीय मुद्रा प्रणाली में)।

प्रश्न 2

(ख) चार आने में कितने पैसे होते हैं?

हल

1 रुपया = 16 आने = 100 पैसे (दशमलव प्रणाली में)
इसलिए 1 आना = 100 ÷ 16 = 6.25 पैसे
4 आने = 4 × 6.25 = 25 पैसे

उत्तर: चार आने में 25 पैसे होते हैं।

प्रश्न 3

(ग) आपके आस-पास गज शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में किया जाता है? पता लगाइए और लिखिए।

हल

'गज' लंबाई मापने की एक पुरानी इकाई है जो अँग्रेजी के 'yard' के बराबर है।
आस-पास गज शब्द का प्रयोग इन संदर्भों में होता है:
1. कपड़े की दुकान पर — 'दो गज कपड़ा दे दो।' (साड़ी, धोती, मलमल आदि मापने के लिए)
2. ज़मीन/भूमि मापने में — कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि माप के लिए
3. निर्माण कार्य में — दीवार की ऊँचाई या लंबाई नापने के लिए

उत्तर: गज शब्द का प्रयोग मुख्यतः कपड़े की दुकान पर कपड़ा मापने के लिए किया जाता है। यह 'yard' के बराबर है।

प्रश्न 4

(घ) बताइए कि एक गज में कितनी फीट होती हैं?

हल

1 गज = 1 yard (अँग्रेजी माप)

1 yard = 3 feet

अतः 1 गज = 3 फीट।

उत्तर: एक गज में 3 फीट होती हैं।